शैली की दृष्टि से पंत का बिम्ब और प्रतीक विधान भी उल्लेखनीय है। आपके अध्ययन की सुविधा के लिए पंत के बिम्ब विधान को चाक्षुष, श्रव्य, स्पर्श, घ्राण या गंध, और आस्वाद्य बिम्बों की पाँच श्रेणियों में विभक्त कर विवेचित विश्लेषित किया गया है। इनके अलग-अलग अध्ययन से आप पंत बिम्ब निर्माण के कौशल से अच्छी तरह परिचित हो सकेंगे।

'युगवाणी' और 'ग्राम्या' की रचना के बाद पंत की काव्य-शैली लगातार अधिकाधिक प्रतीकात्मक होती गयी है। इसे स्पष्ट करने के लिए इनकी प्रतीक योजना संबधी विशेषताओं का आलोचनात्मक विवेचन-विश्लेषण इस इकाई में किया गया है। इनकी योजना से जहाँ एक ओर पंत के काव्य में प्रभावोत्पादकता बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर दुरूहता का दोष भी समाविष्ट हुआ है। प्रतीकों के संबंध में इस तथ्य की जानकारी आपके लिए उपयोगी हो सकती है।

प्रस्तुत इकाई के अंत में पंत द्वारा प्रयुक्त काव्य-रूप और इनकी छंद विधान संबंधी विशेषताओं पर भी विचार किया गया है। इस प्रक्रिया में कवि के प्रगीत काव्य संबंधी विशेषताओं के साथ ही प्रबंधात्मक रचनाओं, विशेषतः काव्य-रूपकों की विशेषताओं को भी उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया है। प्रबंधात्मकता की दृष्टि से पंत का 'लोकायतन' विशेष उल्लेखनीय है। 'कामायनी' के बाद 'लोकायतन' छायावादी काव्य धारा का दूसरा महाकाव्य है। अतः इसकी रचना शिल्प संबंधी विशेषताओं को विशेष रूप से उद्‌घाटित किया गया है। शैली की दृष्टि से छंद-विधान का भी अपना विशेष महत्व है। निराला और प्रसाद की भाँति पंत ने भी इस दृष्टि से कुछ नये प्रयोग किए हैं। पंत ने परांपरागत मात्रिक छंदों में अपेक्षित परिवर्तन, कहीं दो बंदों के मिश्रण और कहीं नवीन छंद योजना द्वारा अपने कौशल का परिचय दिया है। आवश्यकता के अनुकूल इन्होंने तुकांत और अतुकांत दोनों प्रकार के छंदों का प्रयोग कुशलतापूर्वक किया है। निराला के प्रभाव या उनकी प्रतिद्वंद्विता के वशीभूत पंत ने 'स्वर्ण किरण', 'स्वर्ण धूलि', 'अतिभा' आदि संग्रहों की कुछ कविताओं में मुक्त छंद का भी प्रयोग किया है। 'कला और बूढ़ा चाँद' की अधिकांश कविताएँ मुक्त छंद में लिखी गयी हैं। छंद प्रयोग, विशेषतः मुक्त छंद-योजना की दृष्टि से पंत पर समुचित विचार के लिए निराला से इनकी तुलना भी की गयी है। फलस्वरूप पंत की छंद प्रयोग संबंधी उपलब्धियों के साथ इनकी त्रुटियों को उजागर करने का प्रयास भी इस इकाई में किया गया है। इससे आपको निराला की मुक्त छंद संबंधी अवधारणा और उसके महत्व को समझने में सहायता मिलेगी और पंत के छंद-प्रयोग का आलोचनात्मक निरीक्षण-परीक्षण भी आप आसानी से कर सकेंगे।

12.6 प्रश्न

1. पंत की काव्य-भाषा से संबंधित विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
2. सम्मूर्तन विधान की दृष्टि से पंत की अप्रस्तुत योजना के महत्व को उद्‌घाटित करें।
3. बिम्ब-योजना की दृष्टि से पंत के काव्य की विशेषताओं को स्पष्ट करें।
4. पंत के काव्य में छंद विधान के महत्व पर प्रकाश डालें।
5. शब्द शिल्पी के रूप में पंत के महत्व को रेखांकित करें।